ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 129-130**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

अचला नागर के कथा–साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना के विविध आयाम

छोटेलाल कुशवाहा

शोध अध्येता– हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-05.09.2025, Revised-11.09.2025, Accepted-17.09.2025 **E-mail : chhotelalkushwaha86@gmail.com**

सारांशः ***हिंदी कथा–साहित्य में मध्यवर्ग एक ऐसा वर्ग है, जो सामाजिक संरचना का सबसे अधिक संवेदनशील, संक्रमणशील और संघर्षशील हिस्सा रहा है। स्वतंत्रता के बाद उत्पन्न सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों ने मध्यवर्गीय जीवन को नई चुनौतियों, आकांक्षाओं और द्वंद्वों से भर दिया। अचला नागर का कथा–साहित्य इसी मध्यवर्गीय जीवन–बोध का यथार्थपरक दस्तावेज है।***

कुंजीभूत शब्द– **हिंदी कथा–साहित्य, मध्यवर्गीय चेतना, विविध आयाम, संवेदनशील, संक्रमणशील, संघर्षशील हिस्सा, जीवन–बोध।**

अचला नागर की कथाओं में मध्यवर्ग केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि कथा–संरचना की केंद्रीय चेतना है। उनके पात्र आर्थिक असुरक्षा, पारिवारिक दायित्व, नैतिक मूल्यों और सामाजिक अपेक्षाओं के दबाव में निरंतर आत्मसंघर्ष करते दिखाई देते हैं।[1]

मध्यवर्गीय चेतना की अवधारणा– आधुनिक हिंदी कथा–साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना एक केंद्रीय अवधारणा के रूप में उभरकर सामने आती है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में मध्यवर्ग का तीव्र विस्तार हुआ, जिसके परिणामस्वरूप उसके जीवन–संघर्ष, नैतिक द्वंद्व, आर्थिक असुरक्षा और सामाजिक आकांक्षाएँ साहित्य का प्रमुख विषय बनीं। अचला नागर का कथा–साहित्य इसी मध्यवर्गीय जीवन का सजीव और यथार्थपरक दस्तावेज है। उनके पात्र सामान्य मध्यवर्गीय व्यक्ति हैं, जो सीमित साधनों में जीवन जीते हुए आत्मसम्मान, नैतिकता और सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने का प्रयास करते हैं।[2]

मध्यवर्गीय चेतना का अर्थ– मध्यवर्गीय चेतना से आशय उस मानसिक एवं वैचारिक संरचना से है, जिसमें मध्यवर्गीय व्यक्ति अपने जीवन को देखता और अनुभव करता है। यह चेतना आर्थिक सीमाओं, सामाजिक मर्यादाओं और नैतिक मूल्यों के बीच संतुलन साधने का प्रयास करती है। अचला नागर के कथा–साहित्य में यह चेतना पात्रों के आंतरिक संवाद, आत्मसंघर्ष और मनोवैज्ञानिक द्वंद्व के रूप में अभिव्यक्त होती है। उनके पात्र न तो विद्रोही हैं और न ही पूर्णतः समर्पणशील, बल्कि परिस्थितियों से जूझते हुए यथार्थ को स्वीकार करने वाले साधारण मनुष्य हैं।[3]

अचला नागर के कथा–साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना के सामाजिक आधार– आर्थिक असुरक्षाः अचला नागर के अधिकांश पात्र आर्थिक रूप से सीमित संसाधनों में जीवन व्यतीत करते हैं। उनकी कहानियों में नौकरी की अनिश्चितता, बढ़ती महँगाई और पारिवारिक उत्तरदायित्व मध्यवर्गीय जीवन की मूल समस्याओं के रूप में उभरते हैं। यह आर्थिक दबाव पात्रों को व्यवहारिक और कई बार समझौतावादी बना देता है।[4]

सामाजिक प्रतिष्ठा और लोक–लाजः मध्यवर्गीय चेतना का एक प्रमुख पक्ष सामाजिक प्रतिष्ठा की चिंता है। अचला नागर के पात्र समाज में अपनी छवि बनाए रखने के लिए व्यक्तिगत इच्छाओं का दमन करते दिखाई देते हैं। लोक–लाज और सामाजिक मर्यादा उनके निर्णयों को गहराई से प्रभावित करती है।

शिक्षा और बौद्धिकता– अचला नागर के कथा–साहित्य में शिक्षित मध्यवर्ग का चित्रण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। शिक्षा उनके पात्रों को आत्मचेतन बनाती है, जिससे वे अपने जीवन की विसंगतियों को अधिक तीव्रता से अनुभव करते हैं। यही आत्मचेतना मध्यवर्गीय चेतना को संवेदनशील और जटिल बनाती है।

मध्यवर्गीय चेतना के प्रमुख लक्षण– (अचला नागर के संदर्भ में)

- द्वंद्वात्मक चेतना– आदर्श और यथार्थ के बीच निरंतर संघर्ष।
- आत्मसंघर्ष–पात्र अपने निर्णयों को लेकर मानसिक तनाव और आत्मग्लानि से ग्रस्त रहते हैं।
- नैतिक आग्रह–नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था, किंतु परिस्थितिवश समझौता।
- कुंठा और असंतोष–अपूर्ण आकांक्षाओं से उत्पन्न मानसिक पीड़ा।[5]

मध्यवर्गीय चेतना और आधुनिक जीवन– अचला नागर का कथा–साहित्य आधुनिक जीवन की जटिलताओं को मध्यवर्गीय चेतना के माध्यम से प्रस्तुत करता है। शहरीकरण, बदलते पारिवारिक संबंध, स्त्री–पुरुष संबंधों में तनाव और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियाँ उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। आधुनिकता के प्रभाव से मध्यवर्गीय चेतना अधिक आत्मकेंद्रित और मनोवैज्ञानिक हो जाती है।

साहित्यिक महत्व– अचला नागर के कथा–साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना का चित्रण हिंदी साहित्य को सामाजिक यथार्थ से जोड़ता है। उनके पात्र किसी विशिष्ट वर्ग का प्रतिनिधित्व न होकर व्यापक मध्यवर्गीय समाज की मानसिकता को अभिव्यक्त करते हैं। इस दृष्टि से उनका साहित्य मध्यवर्गीय जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज कहा जा सकता है।[6]

अचला नागर के कथा–साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना जीवन के यथार्थ अनुभवों से निर्मित हुई है। यह चेतना आर्थिक संघर्ष, सामाजिक दबाव और नैतिक द्वंद्व का समन्वित रूप है। अचला नागर ने इस चेतना को संवेदनशीलता और मनोवैज्ञानिक गहराई के साथ प्रस्तुत किया है, जिससे उनका कथा–साहित्य आधुनिक हिंदी साहित्य में विशेष महत्व रखता है।

मध्यवर्गीय चेतना से आशय उस मानसिक, सामाजिक और नैतिक दृष्टि से है, जो सीमित संसाधनों, अस्थिर आय और सामाजिक मर्यादाओं के बीच जीवन को संतुलित करने का प्रयास करती है। यह चेतना न तो पूर्णतः शोषक है और न ही पूर्णतः शोषित, बल्कि दोनों के बीच संघर्षरत रहती है।

अचला नागर की कथाओं में यह चेतना जीवन के छोटे–छोटे अनुभवों, असफलताओं और समझौतों के माध्यम से व्यक्त होती है।

आर्थिक असुरक्षा और जीवन–संघर्ष– अचला नागर के कथा–साहित्य में मध्यवर्गीय पात्रों की सबसे प्रमुख समस्या आर्थिक अस्थिरता है। सीमित आय, नौकरी की अनिश्चितता और बढ़ती आवश्यकताएँ उनके जीवन को तनावग्रस्त बनाती हैं। यह आर्थिक दबाव उनके पारिवारिक संबंधों और आत्मसम्मान को भी प्रभावित करता है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

उनकी कहानियों में आर्थिक संकट केवल बाहरी समस्या नहीं, बल्कि मानसिक पीड़ा का कारण बनकर उभरता है। पात्र अक्सर अपने सपनों को त्याग कर यथार्थ से समझौता करते दिखाई देते हैं।[7]

पारिवारिक दायित्व और संबंधों की जटिलता– मध्यवर्गीय चेतना का एक महत्वपूर्ण आयाम पारिवारिक उत्तरदायित्व है। अचला नागर के पात्र परिवार के लिए अपने व्यक्तिगत सुखों का बलिदान करते हैं। पति–पत्नी संबंध, माता–पिता और संतान के बीच की अपेक्षाएँ तथा सामाजिक मर्यादाएँ कथाओं में गहराई से चित्रित हैं।

उनके यहाँ परिवार प्रेम और सुरक्षा का केंद्र होने के साथ–साथ तनाव और कुंठा का कारण भी बनता है।[8]

नैतिक द्वंद्व और मूल्य–संघर्ष– अचला नागर की कथाओं में मध्यवर्गीय व्यक्ति नैतिक आदर्शों और व्यावहारिक मजबूरियों के बीच झूलता रहता है। ईमानदारी, आत्मसम्मान और सामाजिक प्रतिष्ठा जैसे मूल्य अक्सर जीवन की वास्तविकताओं से टकराते हैं। यह नैतिक द्वंद्व पात्रों की चेतना को जटिल और बहुआयामी बनाता है। वे सही और गलत के बीच स्पष्ट रेखा नहीं खींच पाते, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेने को विवश होते हैं।[9]

स्त्री–चेतना और मध्यवर्ग– अचला नागर का कथा–साहित्य विशेष रूप से मध्यवर्गीय स्त्री की चेतना को अभिव्यक्त करता है। उनकी स्त्री पात्र घरेलू दायित्वों, सामाजिक बंधनों और आत्मपहचान के संघर्ष से जूझती हैं।

मध्यवर्गीय स्त्री की चेतना यहाँ केवल पीड़ा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि आत्मबोध और प्रतिरोध की भावना भी विकसित करती है। यह पक्ष अचला नागर को समकालीन कथाकारों में विशिष्ट बनाता है।

सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकता का प्रभाव– शहरीकरण, शिक्षा और आधुनिक जीवन– शैली के प्रभाव ने मध्यवर्गीय चेतना को नई दिशा दी है। अचला नागर की कथाओं में परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

उनके पात्र आधुनिक सोच को अपनाना चाहते हैं, किंतु सामाजिक और पारिवारिक संरचनाएँ उन्हें पूरी स्वतंत्रता नहीं देतीं। यह संघर्ष कथाओं को यथार्थपरक बनाता है।[10]

मानसिक तनाव, अकेलापन और कुंठा– मध्यवर्गीय जीवन की अनिश्चितता पात्रों को मानसिक तनाव, अकेलेपन और अवसाद की ओर ले जाती है। अचला नागर इस मनोवैज्ञानिक पक्ष को अत्यंत संवेदनशीलता से उभारती हैं। उनके पात्र भीड़ में रहते हुए भी अकेले हैं। यह अकेलापन मध्यवर्गीय चेतना का एक महत्वपूर्ण आयाम है।[11]

निष्कर्ष– इस प्रकार अचला नागर के कथा–साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना के विविध आयाम–आर्थिक संघर्ष, पारिवारिक दायित्व, नैतिक द्वंद्व, स्त्री–चेतना और मानसिक तनावकृसार्थक रूप में अभिव्यक्त हुए हैं। उनका कथा–साहित्य मध्यवर्गीय जीवन का केवल चित्रण नहीं करता, बल्कि उसकी संवेदनात्मक गहराई को उजागर करता है।

अचला नागर की कथाएँ हिंदी कथा–परंपरा में मध्यवर्गीय चेतना के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करती हैं।

सदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामविलास शर्मा, हिंदी कहानी का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 215.
2. अचला नागर, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 12.
3. अचला नागर, कथा–संग्रह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 45.
4. शिवकुमार मिश्र, अचला नागर का कथा साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2019, पृ. 73.
5. अचला नागर, चयनित कहानियाँ, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2018, पृ. 101.
6. नामवर सिंह, आधुनिक हिंदी कथा–साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृ. 142.
7. नामवर सिंह, कहानी नई कहानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 132.
8. अचला नागर, कहानी संग्रह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 56.
9. शिवकुमार मिश्र, आधुनिक हिंदी कथा–चेतना, लोकभारती, इलाहाबाद, 2012, पृ. 164.
10. अचला नागर, चयनित कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 103.
11. डॉ० नीलम यादव, समकालीन हिंदी कहानी, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 2015, पृ. 89.

*****